(194)

ISSN : 2348-4624
Year : VIII, No. : XXIX, Part-II
January-March, 2021

I2OR Impact Factor : 3.540

Śodha Mīmāṁsā

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Editor in chief
Dr. Rakesh Kumar Maurya

Associate Editor
Dr. Anish Kumar Verma & Manish Dr. Devi Prabha

Published by :
Kusum Jankalyan Samiti
Deoria, U.P. (INDIA)

Śodha Mimāṁsā - ISSN 2348-4624
Letter No. NSL ISSN INF 2014 461
Published by : Kusum Jankalyan Samiti, Deoria, U.P. (INDIA)
UGC Journal No. 48923

I2OR Impact Factor : 3.540
Year : VIII, No. XXIX, Part-II
January-March, 2021
Page No. : 75-77

197

वैदिक संस्कृति का आद्य प्रतीक गौ

आचार्य (डॉ.) बृहस्पतिमिश्रः*

*सहाचार्य, संस्कृत–विभाग, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, काङगड़ा (हि.प्र.)

भारतीय संस्कृति के आद्य प्रतीकों में गौ का अन्यतम स्थान है। वह हमारे सांस्कृतिक चरित्र का यथार्थ आदर्श है। भारतीय संस्कृति के सुदीर्घ काल प्रवाह में कोई भी कालखण्ड ऐसा प्रतीत नहीं होता जहां गौ को महत्ता प्रदान न की गई हो। चाहे वह वैदिक काल हो या नन्दवंश, मौर्य वंश और गुप्त वंश का ऐतिहासिक युग हो, चाहे पूर्व मध्यकाल हो या उत्तर मध्यकाल, चाहे मुगल काल हो। प्रत्येक काल में भारतीयों के लिए गौ मातृभूत रही है और माता के समान सम्माननीय रही है। वैदिक काल खड से ही हम पाते हैं कि भारतीय संस्कृति यज्ञ रूपा है और यज्ञ गौ आधारित है। अतः ऋग्वेद में गौ का देवता रूप में वर्णन प्राप्त होता है –

माता रूद्राणां दुहिता वसूनां,
स्वसाऽऽदित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय,
मा गामनागामदितिं वधिष्ट।।[1]

अर्थात गौ रुद्रों की माता वसुओं की कन्या एवं अर्यमा की बहन है, यह अमृत की नाभि है, यह अदिति स्वरूप है। इसलिए इसका वध करने का किसी को अधिकार नहीं है।

अथर्ववेद के एक मन्त्र में इसे सर्वदेवमयः कहकर विश्वरूप कहा है–

प्रजापतिश्च परमेष्ठी च शृङ्गे इन्द्र : शिरो
अग्निर्ललाटं यमः कृकाटम्।।
एतद् वै विश्वरूपं सर्वरूपं गोरूपम्।।2

अर्थात् प्रजापति और परमेष्ठी गौ के शृङ्ग भाग पर अवस्थित है, देवराज इंद्र शिरो भाग पर प्रतिष्ठित है, अग्नि देवता इसके ललाट पर अधिष्ठित है, इसके भृकुटी प्रदेश में दण्डधारक यम का निवास है, इस प्रकार गौ विश्वरूप है, सर्वदेवमय है। गौ की महिमा का वर्णन करते हुए वेद में इसे अघ्न्या कहा है।[3] वैदिक कोष निघण्टु में गौ को अघ्न्या कहा है।[4] निरुक्तकार यास्क ने अघ्न्या पद का निर्वचन करते हुए कहा है –

'अघ्न्या अहन्तव्या भवति। अघघ्नीति वा।'[5] इसकी व्याख्या करते हुए आचार्य दुर्ग ने लिखा है 'अघ्न्या कस्मात्? सा हि सर्वस्यैव अहन्तव्या भवति'[6] निरुक्त के अन्य भाष्यकारों ने भी इस पद का अर्थ 'हन्तुम् अयोग्या' ही किया है।[7] वेद मन्त्रों में गौ माता के अघ्न्या पद का विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है। यह पद चारों संहिताओं में प्रायः 137 बार प्राप्त होता है।

वैदिक काल में गौ अत्यंत सम्मानजनक स्थिति को प्राप्त थी और देव रूप में उसकी प्रतिष्ठा थी। यजुर्वेद का मन्त्र राजा को निर्देश देते हुए कहता है कि हे राजन् तुम मनुष्य को बहुत सुख देने वाली दुग्ध के लिए परिपालन के योग्य, घृत देने वाली आदित्य स्वरूपा गायों को मत मारो।

इमं स्नाहस्रं शतधारमुत्सं व्यच्यमानं सरिरस्य मध्ये।
घृतं दुहानामदितिं जनायाग्ने मा हिंसीः परमे व्योम।।[8]

अथर्ववेद के एक मन्त्र में गौ की हिंसा करने वाले को गोली से मारने का संकेत प्राप्त होता है वहाँ कहा गया है कि यदि तुम हमारे गायों एवं पुरुषों का वध करते हो तो तुम शीशे से भेद दिए जाओगे और तुम्हें ऐसा दण्ड प्राप्त होगा जिससे तुम्हारे प्राण न बचें।

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पुरूषम्।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा।।[9]

वहीं एक मन्त्र में कहा गया है कि गौ का वध करना तो बहुत दूर यदि गौ को पैर भी लग जाए तो यह भी पाप का कारक होता है वहां कहा गया है कि जो गौ को पैर से स्पर्श करता है सूर्य के समक्ष मूत्र त्याग करता है ऐसे पुरुष को मैं जड़ मूल से काट गिराता हूँ उसके पश्चात् तू अपनी छाया तक भी यहां पर न कर सकेगा।[10] इसी प्रकार एक मन्त्र में गौ रक्षक की लापरवाही का वर्णन करते हुए कहा गया है कि यदि कोई गौ का रक्षक अवहेलना से गौ की सेवा करता है। कौवा उसके रोमों को नोचता है तो इस पाप का भी भागी गौ रक्षक को बनना पड़ता है इसके परिणाम स्वरूप न केवल उसे क्षय रोग घेर लेता है अपितु उसके पुत्र भी अकाल मृत्यु को प्राप्त होते हैं।[11]

गौ को किसी भी प्रकार प्रकार का कष्ट देना या उसके शरीर से छेड़छाड़ करना अथर्ववेद के ऋषि की दृष्टि में अपराध माना गया है।[12] इतना ही नहीं अथर्ववेद का ऋषि मानता है कि यदि कोई दासी गौ के गोबर या मूत्र को लापरवाही से इधर–उधर बिखेर देती है तो इसके परिणाम स्वरूप उसे विकलांग और विरूप संतान प्राप्त होती है।[13] यजुर्वेद में में गोघातक के लिए प्राण दण्ड का विधान है – अन्तकाय गोघातम्।[14] ऋग्वेद में गौ के कल्याणकारी रूप का वर्णन हमें बहुशः प्राप्त होता है। ऋग्वेद का ऋषि कहता है कि हे भगवती, तुम घास के तिनकों का आहार करके जीवित रहती हो, तुम परम भाग्यशाली हो, हमें भी भाग्यशाली बनाने की कृपा करो, ऐसे तुम घास खाने वाली और निर्मल जल का पान करने वाली भगवती के वध की हम कल्पना कैसे कर सकते हैं।[15]

वैदिक संस्कृति में गौ के दूध का अत्यधिक महत्त्व है ऋग्वेद के एक मन्त्र में ऋषि 'ऋतेन ऋतम्' कहकर गौ के दूध से सत्य की उपासना करने की बात कहता है। यहां कहा गया है कि हे अग्नि! सत्य के कारण स्वरूप ऋत की हम उपासना करते हैं उसे पूजन करने के लिए गायों से हमें नित्य दूध प्राप्त हो, गौ जब कम उम्र की होती हैं तब भी उनके पास पक्व और मधुर दूध होता है, वे चाहे किसी भी रूप की हो लेकिन उनका दूध स्वच्छ, धवल, पौष्टिक और प्राणदायक होता है।[16] वैदिक ऋषि की मान्यता है कि गौ का दूध संपूर्ण मानव जाति का पोषण करने वाला है।